रोटियाँ / नज़ीर अकबराबादी

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियाँ ।
फूली नही बदन में समाती हैं रोटियाँ ।।
आँखें परीरुख़ों [1] से लड़ाती हैं रोटियाँ ।
सीने ऊपर भी हाथ चलाती हैं रोटियाँ ।।
जितने मज़े हैं सब ये दिखाती हैं रोटियाँ ।।1।।
रोटी से जिनका नाक तलक पेट है भरा ।
करता फिरे है क्या वह उछल-कूद जा बजा ।।
दीवार फाँद कर कोई कोठा उछल गया ।
ठट्ठा हँसी शराब, सनम साक़ी, उस सिवा ।।
सौ-सौ तरह की धूम मचाती हैं रोटियाँ ।।2।।
जिस जा पे हाँडी चूल्हा तवा और तनूर है ।
ख़ालिक़ के क़ुदरतों का उसी जा ज़हूर है ।।
चूल्हे के आगे आँच जो जलती हुज़ूर है ।
जितने हैं नूर सब में यही ख़ास नूर है ।।
इस नूर के सबब नज़र आती हैं रोटियाँ ।।3।।
आवे तवे तनूर का जिस जा ज़ुबाँ पे नाम ।
या चक्की चूल्हे के जहाँ गुलज़ार हो तमाम ।।
वां सर झुका के कीजे दण्डवत और सलाम ।
इस वास्ते कि ख़ास ये रोटी के हैं मुक़ाम ।।
पहले इन्हीं मकानों में आती हैं रोटियाँ ।।4।।
इन रोटियों के नूर से सब दिल हैं पूर-पूर ।
आटा नहीं है छलनी से छन-छन गिरे है नूर ।।
पेड़ा हर एक उस का है बर्फ़ी या मोती चूर ।
हरगिज़ किसी तरह न बुझे पेट का तनूर ।।
इस आग को मगर यह बुझाती हैं रोटियाँ ।।5।।
पूछा किसी ने यह किसी कामिल[2] फ़क़ीर से ।
ये मेह[3]-ओ-माह[4] हक़ ने बनाए हैं काहे के ।।
वो सुन के बोला, बाबा ख़ुदा तुझ को ख़ैर दे ।
हम तो न चाँद समझें, न सूरज हैं जानते ।।
बाबा हमें तो ये नज़र आती हैं रोटियाँ ।।6।।
फिर पूछा उस ने कहिए यह है दिल का नूर क्या ?
इस के मुशाहिर्द[5] में है ख़लिता ज़हूर[6] क्या ?
वो बोला सुन के तेरा गया है शऊर क्या ?
कश्फ़-उल-क़ुलूब[7] और ये कश्फ़-उल-क़ुबूर[8] क्या ?
जितने हैं कश्फ़[9] सब ये दिखाती हैं रोटियाँ ।।7।।
रोटी जब आई पेट में सौ कन्द[10] घुल गए ।
गुलज़ार[11] फूले आँखों में और ऐश तुल गए ।।
दो तर निवाले पेट में जब आ के ढुल गए ।
चौदह तबक़[12] के जितने थे सब भेद खुल गए ।।
यह कश्फ़ यह कमाल दिखाती हैं रोटियाँ ।।8।।
रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो ।
मेले की सैर ख़्वाहिश-ए-बाग़-ओ-चमन न हो ।।
भूके ग़रीब दिल की ख़ुदा से लगन न हो ।
सच है कहा किसी ने कि भूके भजन न हो ।।
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियाँ ।।9।।
अब जिनके आगे मालपूए भर के थाल हैं ।
पूरे भगत उन्हें कहो, साहब के लाल हैं ।।
और जिन के आगे रोग़नी और शीरमाल हैं ।
आरिफ़ वही हैं और वही साहिब कमाल हैं ।।
पकी पकाई अब जिन्हें आती हैं रोटियाँ ।।10।।
कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते ।
लम्बे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते ।।
बाँधे कोई रुमाल है रोटी के वास्ते ।
सब कश्फ़ और कमाल हैं रोटी के वास्ते ।।
जितने हैं रूप सब ये दिखाती हैं रोटियाँ ।।11।।
रोटी से नाचे प्यादा क़वायद दिखा-दिखा ।
असवार नाचे घोड़े को कावा लगा-लगा ।।
घुँघरू को बाँधे पैक[13] भी फिरता है जा बजा ।
और इस के सिवा ग़ौर से देखो तो जा बजा ।।
सौ-सौ तरह के नाच दिखाती हैं रोटियाँ ।।12।।
रोटी के नाच तो हैं सभी ख़ल्क में बड़े ।
कुछ भाँड भगतिए ये नहीं फिरते नाचते ।।
ये रण्डियाँ जो नाचें हैं घूँघट को मुँह पे ले ।
घूँघट न जानो दोस्तो ! तुम जिनहार[14] इसे ।।
उस पर्दे में ये अपनी कमाती हैं रोटियाँ ।।13।।
वह जो नाचने में बताती हैं भाव-ताव ।
चितवन इशारतों से कहें हैं कि 'रोटी लाव' ।।
रोटी के सब सिंगार हैं रोटी के राव-चाव ।
रंडी की ताब क्या करे जो करे इस कदर बनाव ।।
यह आन, यह झमक तो दिखाती हैं रोटियाँ ।।14।।
अशराफ़ों[15] ने जो अपनी ये जातें छुपाई हैं ।
सच पूछिए, तो अपनी ये शानें बढ़ाई हैं ।।
कहिए उन्हीं की रोटियाँ कि किसने खाई हैं ।
अशराफ़[16] सब में कहिए, तो अब नानबाई हैं ।।
जिनकी दुकान से हर कहीं जाती हैं रोटियाँ ।।15।।
भटियारियाँ कहावें न अब क्योंकि रानियाँ ।
मेहतर खसम हैं उनके वे हैं मेहतरानियाँ ।।
ज़ातों में जितने और हैं कस्सि कहानियाँ ।
सब में उन्हीं की ज़ात को ऊँची हैं बानियाँ ।।
किस वास्ते की सब ये पकाती हैं रोटियाँ ।।16।।
दुनिया में अब बदी न कहीं और निकोई[17] है ।
ना दुश्मनी ना दोस्ती ना तुन्दखोई[18] है ।।
कोई किसी का, और किसी का न कोई है ।
सब कोई है उसी का कि जिस हाथ डोई है ।।
नौकर नफ़र[19] ग़ुलाम बनाती हैं रोटियाँ ।।17।।
रोटी का अब अज़ल से हमारा तो है ख़मीर ।
रूखी भी रोटी हक़ में हमारे है शहद-ओ-शीर ।।
या पतली होवे मोटी ख़मीरी हो या फ़तीर[20] ।
गेहूँ, ज्वार, बाजरे की जैसी भी हो 'नज़ीर' ।।
हमको तो सब तरह की ख़ुश आती हैं रोटियाँ ।।18।

शब्दार्थ:-

1.परियों जैसी शक्ल सूरत वाली 2. निपुण, होशियार 3. सूर्य 4.चाँद 5. निरीक्षण 6. प्रकट 7. मन की गुप्त जानकारी देना 8. क़ब्र की गुप्त जानकारी दे 9. गुप्तज्ञान 10. शक्कर, मिठाई 11. बाग़ 12. चौदह लोक, इस्लामी दर्शन के अनुसार लोक चौदह हैं। 13. डाकिया या पत्रवाहक, पुराने ज़माने में जिसके पैर में या लाठी में घूँघरू बँधे होते थे 14. हरगिज, कदापि 15. कुलीन, खानदानी 16. शरीफ़ का बहुवचन 17.अच्छाई 18. बदमिजाज़ी 19. मज़दूर 20. गुंधे हुए आटे की लोई

उपयोग, नाश अथवा दुरुपयोग / कोलंबा कालीधर

एक गांव में धर्मदास नामक एक व्यक्ति रहता था। बातें तो बड़ी ही अच्छी- अच्छी करता था पर था एकदम कंजूस। कंजूस भी ऐसा वैसा नहीं बिल्कुल मक्खीचूस।

चाय की बात तो छोड़ों वह किसी को पानी तक के लिए नहीं पूछता था। साधु-संतों और भिखारियों को देखकर तो उसके प्राण ही सूख जाते थे कि कहीं कोई कुछ मांग न बैठे।

एक दिन उसके दरवाजे पर एक महात्मा आये और धर्मदास से सिर्फ एक रोटी मांगी। पहले तो धर्मदास ने महात्मा को कुछ भी देने से मना कर दिया,लेकिन तब वह वहीं खड़ा रहा तो उसे आधी रोटी देने लगा। आधी रोटी देखकर महात्मा ने कहा कि अब तो मैं आधी रोटी नहीं पेट भरकर खाना खाऊंगा। इस पर धर्मदास ने कहा कि अब वह कुछ नहीं देगा। महात्मा रातभर चुपचाप भूखा-प्यासा धर्मदास के दरवाजे पर खड़ा रहा।

सुबह जब धर्मदास ने महात्मा को अपने दरवाजे पर खड़ा देखा तो सोचा कि अगर मैंने इसे भरपेट खाना नहीं खिलाया और यह भूख-प्यास से यहीं पर मर गया तो मेरी बदनामी होगी। बिना कारण साधु की हत्या का दोष लगेगा।

धर्मदास ने महात्मा से कहा कि बाबा तुम भी क्या याद करोगे, आओ पेट भरकर खाना खा लो। महात्मा भी कोई ऐसा वैसा नहीं था। धर्मदास की बात सुनकर महात्मा ने कहा कि अब मुझे खाना नहीं खाना, मुझे तो एक कुआं खुदवा दो।

लो अब कुआं बीच में कहां से आ गया' धर्मदास ने साधु महाराज से कहा। रामदयाल ने कुआं खुदवाने से साफ मना कर दिया। साधु महाराज अगले दिन फिर रातभर चुपचाप भूखा- प्यासा धर्मदास के दरवाजे पर खड़ा रहा।अगले दिन सुबह भी जब धर्मदास ने साधु महात्मा को भूखा-प्यासा अपने दरवाजे पर ही खड़ा पाया तो सोचा कि अगर मैने कुआं नहीं खुदवाया तो यह महात्मा इस बार जरूर भूखा-प्यास मर जायेगा और मेरी बदनामी होगी।

धर्मदास ने काफी सोच- विचार किया और महात्मा से कहा कि साधु बाबा मैं तुम्हारे लिए एक कुआं खुदवा देता हूं और इससे आगे अब कुछ मत बोलना।

'नहीं, एक नहीं अब तो दो कुएं खुदवाने पड़ेंगे', महात्मा की फरमाइशें बढ़ती ही जा रही थीं।

धर्मदास कंजूस जरूर था बेवकूफ नहीं। उसने सोचा कि अगर मैंने दो कुएं खुदवाने से मनाकर दिया तो यह चार कुएं खुदवाने की बात करने लगेगा इसलिए रामदयाल ने चुपचाप दो कुएं खुदवाने में ही अपनी भलाई समझी।

कुएं खुदकर तैयार हुए तो उनमें पानी भरने लगा। जब कुओं में पानी भर गया तो महात्मा ने धर्मदास से कहा, %दो कुओं में से एक कुआं मैं तुम्हें देता हूं और एक अपने पास रख लेता हूं। मैं कुछ दिनों के लिए कहीं जा रहा हूं, लेकिन ध्यान रहे मेरे कुएं में से तुम्हें एक बूंद पानी भी नहीं निकालना है। साथ ही अपने कुएं में से सब गांव वालों को रोज पानी निकालने देना है। मैं वापस आकर अपने कुएं से पानी पीकर प्यास बुझाऊंगा।'धर्मदास ने महात्मा वाले कुएं के मुंह पर एक मजबूत ढक्कन लगवा दिया।

सब गांव वाले रोज धर्मदास वाले कुएं से पानी भरने लगे। लोग खूब पानी निकालते पर कुएं में पानी कम न होता। शुध्द-शीतल जल पाकर गांव वाले निहाल हो गये थे और महात्मा जी का गुणगान करते न थकते थे। एक वर्ष के बाद महात्मा पुन: उस गांव में आये और धर्मदास से बोले कि उसका कुआं खोल दिया जाये। धर्मदास ने कुएं का ढक्कन हटवा दिया।

लोग लोग यह देखकर हैरान रह गये कि कुएं में एक बूंद भी पानी नहीं था।महात्मा ने कहा, 'कुएं से कितना भी पानी क्यों न निकाला जाए वह कभी खत्म नहीं होता अपितु बढ़ता जाता है।कुएं का पानी न निकालने पर कुआं सूख जाता है इसका स्पष्ट प्रमाण तुम्हारे सामने है और यदि किसी कारण से कुएं का पानी न निकालने पर पानी नहीं भी सुखेगा तो वह सड़ अवश्य जायेगा और किसी काम में नहीं आयेगा।'महात्मा ने आगे कहा, 'कुएं के पानी की तरह ही धन-दौलत की भी तीन गतियां होती हैं, उपयोग, नाश अथवा दुरुपयोग।

धन-दौलत का जितना इस्तेमाल करोगे वह उतना ही बढ़ती जायेगी। धन-दौलत का इस्तेमाल न करने पर कुएं के पानी की वह धन-दौलत निरर्थक पड़ी रहेगी। उसका उपयोग संभव नहीं रहेगा या अन्य कोई उसका दुरुपयोग कर सकता है। अत: अर्जित धन-दौलत का समय रहते सदुपयोग करना अनिवार्य है।' 'ज्ञान की भी कमोबेश यही स्थिति होती है।धन-दौलत से दूसरों की सहायता करने की तरह ही ज्ञान भी बांटते चलो। हमारा समाज जितना अधिक ज्ञानवान, जितना अधिक शिक्षित व सुसंस्कृत होगा उतनी ही देश में सुख- शांति और समृध्दि आयेगी। फिर ज्ञान बांटने वाले अथवा शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने वाले का भी कुएं के जल की तरह ही कुछ नहीं घटता अपितु बढ़ता ही है'।

हे युगांडा राज्य के मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और बयानमंत्री !

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उनके साथ

जो कह रहे हैं कि मात्र बारह लोग स्वर्गवासी हुए हैं ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उनके साथ जो निगम बोर्ड में बैठे हुए हैं और जिनके हस्ताक्षर और इजाजत के बगैर तृण नहीं डोलता, पुल की क्या मजाल ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उनके साथ जो कमीशनखोरी को जनहित में लिया गया सबसे बड़ा फैसला मानते हैं ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उनके साथ जो नक्शे पर नक्शा बनाने के एवज में बक्से पर बक्सा लेते आए हैं ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उन आवेदकों और संवेदकों के साथ जो सत्ता की चाकरी करते नहीं अघाते ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ लॉ एंड ऑर्डर महकमा के उन हाकिमों के साथ जो निर्माणाधीन पुल के ठीक नीचे वाहनों की आवाजाही बंद कराने की जरूरत नहीं समझते ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उन ज्योतिषाचार्यों के साथ जो विचलित कर देनेवाले जनसंहार को ग्रहों के गठबंधन से ऊपजी विभीषिका बता रहे हैं ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उन लोगों के साथ जिन्होंने 2019 में होनेवाले चुनाव के आलोक में पुल निर्माण में अचानक और अप्रत्याशित तेजी लाने का निर्देश दिया था ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उस व्यवस्था के साथ जो सांगठनिक हत्या को मुआवजे की तराजू पर तौलता है ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उनके साथ जो जीवन की मसानी रातों में भी राजसत्ता निर्देशित बंशी बजाने से बाज नहीं आते ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उस सिविल सर्जन के साथ जिसकी नाक के नीचे शव के पोस्टमार्टम के बदले बतौर घूस रुपये ऐंठे जाते हैं ।

पकड़ो और प्यार से पेश आओ उन चमरचीटों के खिलाफ जो हत्या वाली रात को भी जुमलेबाजी की रोशनी से ढँकते हैं ।

और हे युगांडा प्रमुख, कोई एलियन बता रहा था कि पुल गिरी नहीं गिराई गई है । चाहो तो उस एलियन को तत्काल पाकिस्तान भेज सकते हो ।

-संतोष सिंह

आज मैंने क्या सीखा

मनुष्य प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करता है। हर क्रिया पर वह समय एवं धन भी खर्च करता है। अपने जीवन में अच्छी सुविधाएँ जुटाने के लिए, अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए तथा अपने परिवार को सुख-शांति प्रदान करने के लिए, वो निरंतर प्रयास करता है। जब भी वह कोई कार्य करता है, तो वह उनके लिए सोच समझकर एवं अपने बजट के अनुसार योजना बनाता है ताकि उसका परिणाम सुखद हो। इसी प्रकार अभिभावक भी अपने बच्चों के लिए प्रतिदिन 100 से लेकर 500 रुपये तक शिक्षा पर खर्च करते हैं लेकिन वे वर्ष में दो बार ही अपने बच्चों के अंक एवं परिणाम की जाँच करते हैं और सुखद परिणाम न पाकर दुखी होते हैं।

अगर अभिभावक प्रतिदिन अपने बच्चों से यह प्रश्न पूछें कि उन्होंने आज विद्यालय में क्या सीखा तो अवश्य ही बच्चे अपने पाठ्यक्रम पर पूरा ध्यान देंगे तथा विद्यालय में प्रत्येक क्षण का पूर्ण सदुपयोग कर बहुत कुछ सीखने का प्रयास करेंगे। यदि समाज का हर व्यक्ति, अभिभावक, बच्चे और शिक्षक एक अभियान चलायें व स्वयं की जाँच करें कि आज हमने क्या सीखा, बच्चे भी विद्यालय में जाएँ और सोचें की हमने आज कितना सीखा? बच्चे यह भी सोचें कि उनके माता-पिता जो कुछ खर्च करते हैं उसके आधार पर वह प्रत्येक अंतराल में कितना सीख पाये।

तीन विषयों के द्वारा हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, देश का ज़िमेदार नागरिक बनने के लिए हमने किस प्रकार से योगदान दिया, हमने अपने परिवार, आस-पास व पास- पड़ोस के निर्माण के लिए क्या कुछ प्रयत्न किए और तीसरा विषय है, पर्यावरण के लिए हमने कितने अच्छे कार्य किए। हमने अपनी प्राणवायु को शुद्ध करने के लिए तथा जल को शुद्ध करने के लिए कितने प्रयास किए?

हर पल हम स्वाध्याय के द्वारा स्वयं को तथा अपने राष्ट्र को जानें, एक उत्तम समाज का निर्माण करें जहाँ सब सुख-शांति से रहें, तो आओ हम मिलकर इस विषय पर विचार करें और एक अभियान चलाएँ जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं से प्रश्न करे कि आज मैंने क्या सीखा।

ऋषिपाल चौहान, चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल